रैदास

जीवन परिचय-

ज्ञानाश्रयी शाखा में सन्त कबीर के बाद सन्त रविदास या रैदास का नाम उल्लेखनीय है। कबीर के गुरु रामानन्द जी के बारह शिष्य थे, उनमें से एक थे रैदास या रविदास द्धये रामदास गुरु रविदास आदि नामों से भी प्रचलित थेऋ। इनका जन्म 1376 मे काशी में हुआ था। रैदास कबीरदास जी के बाद रामानंद जी के शिष्य हुए, ऐसा उनकी इस रचना से जान पड़ता हैः-

नामदेव कबीर तिलोचन सधाना सेन तरै।
कह रविदास, सुनहु रे संतहु! हरि जिउ तें सबहु सरैं।।

मीराबाई और धान्ना ने उनका नाम बड़े आदर से लिया है, यह भी माना जाता है कि मीरा इनको गुरु मानतीं थीं। जातिवाद के आधाार पर ईश्वर की भद्नि को रैदास ने सारहीन बताया और इस बात पर जोर दिया कि विविधा ग्रन्थों में एक ही परमेश्वर का गुणगान किया गया है और सारे रूप एक ही परमेश्वर के हैं। उन्होंने अपने आचरण तथा व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया कि मनुष्य अपने जन्म तथा व्यवसाय के आधाार पर महान नहीं होता है।

सन्त रैदास की रचनाओं में लोकवाणी का अद्भुत प्रयोग मिलता है, उनका कोई प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं मिलता, फुटकर रचनाएँ ही मिलतीं है। उनके चालीस पद आदि गुरु ग्रन्थ साहिब में भी मिलते हैं। उनके उपदेश आज भी प्रासंगिक हैं। जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाने वालों में रैदास का नाम सबसे पहले आता है। इनके विचारों पर आधाारित ''रविदासी धार्म'' भी प्रचलित हुआ। आज भी सन्त रविदास जातिवाद के खिलाफ संघर्ष के प्रतीक माने जाते हैंः-

कहा भयौ जू मूँड मुंड़ायौ, बहु तीरथ ब्रत कीन्हैं।
स्वांमी दास भगत अरु सेवक, जो परंम तत नहीं चीन्हैं।।

रैदास के पद

जाति-जाति में जाति हैं, जो केतन के पात।
रैदास मनुष ना जुड़ सके जब तक जाति न जात।।
रैदास कनक और कंगन माहि जिमि अंतर कुछु नांहि।
तैसे ही अंतर नहीं हिन्दुअन तुरकन माहि।
हिंदू तुरक नहीं कछु भेदो सभी मह एक रक्त और मासा।
दोस एकऊ दूजा नाहीं, पेख्यों सोइ रैदासा।।
कह रैदास तेरी भगति दूरि है, भाग बड़े सो पावै।
तजि अभिमान मेटि आपा पर, पिपिलक हवै चुनि खावै।।

प्रभु जी तुम संगति सरन तिहारी। जग-जीवन राम मुरारी।।
गली-गली को जल बहि आयो, सुरसरि जाय समायो।
संगति के परताप महातम, नाम गंगोदक पायो।।
स्वाति बूँद बरसे फनि ऊपर, सोई विज होई लाई।
ओही बूँद के मोती निपजै, संगति की अधिकाई।।
तुम चंदन हम रेंड बापुरे, निकट तुम्हारे आसा।
संगति के परताप महातम, आवै बास सुबासा।।
जाति भी ओछी, करम भी ओछा, ओछा कसब हमारा।
नीचे से प्रभु ऊँच कियो है, कहि रैदास विचारा।।

अभ्यास

कविता के साथ :-

1. हिन्दु और मुस्लिम के परस्पर समानता को रैदास कैसे बताते हैं?
2. जाति और धार्म के भेद से रहित किस प्रकार के मानवीय समाज की कल्पना रैदास जी करते है?
3. रैदास किस अभिमान को तजने की बात करते हैं और क्यों?
4. चींटी के उपमान को रैदास ने पद्य में क्यों रखा हैं?
5. रैदास मनुष्य को आपस में जुड़ने का आधाार क्या बताते है?
6. 'सुसंगति' से होने वाले लाभ को रैदास जी ने कैसे समझाया है?
7. "प्रभु की कृपा से खोटे कर्म करने वाले लोग भी तर जाते हैं।" रैदास जी ने ऐसा क्यों कहा है?
8. "स्वाति बूंद बरसे फनि ऊपर, सोई विज होई लाई।
   ओही बूँद के मोती निपजै, संगति की अधिाकाई "
   प्रदत्त पंक्ति की भाव व शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

कविता के आस-पास :-

1. जैसी संगति होती है हममें उसी तरह के गुणों का समावेश होता है' इस पंक्ति से मिलते जुलते भाव वाले पद्यों का संकलन कर लिखिए।
2. रैदास जी के ऐसे पद्यों का संकलन कीजिए, जिससे यह प्रमाणित होता है कि वे निर्गुण बहम के उपसाक थे।
3. रैदास के पद्य को पढ़ने से उनके समय और समाज की किन-किन चुनौतियों को आप महसूस करते हैं? अपने विचार लिखिए।

शब्द-छवि :-

केतन	-	घर
मह	-	महत्व
पेख्यो	-	देखो
सोई	-	वही
पिपिलक	-	चींटी
ह्वै	-	है
सरन	-	शरण
तिहारी	-	तुम्हारे
सुरसरि	-	समुद्र
फनि	-	साँप
विज	-	विष
निपजै	-	उत्पन्न होना
रेंड	-	एक प्रकार का पौधा
बापुरे	-	तुच्छ

बहु बेटियां दूर न जायें

निर्मित शौचालय को उपयोग में लायें

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

राज्य स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण), छत्तीसगढ़
पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मूल्य – ₹ 65.00